माला-संस्कार

मन्त्र-साधना में सु-संस्कृत माला का अपना विशेष महत्त्व है। माला का संस्कार करने के लिये पीपल के नौ पत्तों की आवश्यकता होती है। इनमें से एक पत्ता बीच में रखकर उसके चारों ओर शेष आठ पत्ते इस प्रकार सजाकर रखने होते हैं कि उनका अष्ट-दल-कमल का सा आकार बन जाय। अब बीचवाले पत्ते पर माला को रखकर 'ॐ अं आं' इत्यादि से लेकर 'हं लं क्षं' तक के समस्त स्वर और वर्णों का उच्चारण करे और पंच-गव्य से माला को सिंचित करे। इसके बाद निम्न-लिखित 'सद्योजात'-मन्त्र पढ़कर उसे शुद्ध जल से धो डाले—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवे नाति-भवे भवस्व मां भवद्-भवाय नमः।।

तदनन्तर नीचे लिखे 'वाम-देव'-मन्त्र से माला पर चन्दन, अगर, गन्ध आदि प्रदान करे—

ॐ वाम-देवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कल-विकरणाय नमो बल-विकरणाय नमः।

बलाय नमो बल-प्रमथनाय नमः सर्व-भूत-दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।

अब 'अघोर'-मन्त्र से धूप प्रदान करे। अघोर-मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर-घोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व-शर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्र-रूपेभ्यः ।

इसके बाद निम्नलिखित 'तत्पुरुष'-मन्त्र से लेपन करे—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महा-देवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

यह सब कर चुकने पर माला के प्रत्येक दाने पर एक-एक बार या सौ-सौ बार 'ईशान'-मन्त्र का जप करे, जो इस प्रकार है—

ॐ ईशानः सर्व-विद्यानामीश्वरः सर्व-भूतानां ब्रह्माधि-पतिर्ब्रह्मणोऽधि-पतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा-शिवोम् ।

जप करने के बाद माला में यथा-विधि अपने इष्ट-देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करे। तब इष्ट-मन्त्र से उसकी पूजा करके इस प्रकार उसकी स्तुति करे—

माले माले महा-माले सर्व-तत्व-स्वरूपिणि !
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।

माला में यदि शक्ति की प्रतिष्ठा की गई हो, तो इस प्रार्थना के पहले साधक 'ह्रीं' और जोड़ ले। साथ ही माला की पूजा में लाल फूलों का उपयोग करे। वैष्णव साधक निम्न-लिखित मन्त्र से माला की पूजा करे—

ॐ ऐं श्रीं अक्ष-मालायै नमः ।